Ka'be Ke Baare Mein Dilchasp Ma'lumat (Hindi)

का'बे के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

कुल सफ़हात 26

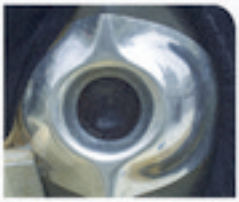

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : **शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल** **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

का'बे के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

येह रिसाला **(का'बे के बारे में दिलचस्प मा'लूमात)**

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hindibook@dawateislamihind.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

यह मज़्मून ''आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात'' के सफ़ह़ा 202 ता 226 से लिया गया है।

का'बे के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

दुआ़ए अ़त्तार

या इलाही जो कोई रिसाला ! ''**का'बे के बारे में दिलचस्प मा'लूमात**'' के 28 सफ़ह़ात पढ़ या सुन ले उस को का'बए मुशर्रफ़ा के त़वाफ़ की बार बार सआ़दत इनायत फ़रमा और बार बार गुम्बदे ख़ज़्रा के जल्वे दिखा और उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शाद है : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم).

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا की सब से अ़ज़ीम ज़ियारत गाह का'बए मुशर्रफ़ा है। हर मुसलमान इस के दीदारो त़वाफ़ के लिये बे क़रार रहता है। **का'बतुल्लाह** के बारे में बा'ज़ **दिलचस्प मा'लूमात** पेश की जाती हैं। क़ुरआने करीम में कई मक़ामात पर **का'बा शरीफ़** का ज़िक्रे ख़ैर किया गया है। चुनान्चे पारह अव्वल **सूरतुल बक़रह** आयत 125 में रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

وَ اِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا (پ۱،البقرة:۱۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब हम ने इस घर को लोगों के लिये मरजअ़ और अमान बनाया।

ह़रम में दरिन्दे शिकार का पीछा नहीं करते

इस आयते करीमा के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में लिखते हैं : (इस आयते मुबारका के लफ़्ज़) "बैत" से **का'बा शरीफ़** मुराद है और इस में तमाम ह़रम शरीफ़ दाख़िल। "अम्न" बनाने से येह मुराद है कि **ह़रमे का'बा** में क़त्लो ग़ारत ह़राम है या येह कि वहां शिकार तक को अम्न है यहां तक कि ह़रम शरीफ़ में शेर भेड़िये भी शिकार का पीछा नहीं करते, छोड़ कर लौट जाते हैं। एक क़ौल येह है कि मोमिन इस में दाख़िल हो कर अ़ज़ाब से मामून (मह़फ़ूज़) हो जाता है। **ह़रम** को इस लिये "ह़रम" कहा जाता है कि इस में क़त्ल, शिकार ह़राम व मम्नूअ़ है। (تفسيرات احمديه ص ٣٤) अगर कोई मुजरिम भी दाख़िल हो जाए तो वहां इस से तअ़र्रुज़ (या'नी रोक-टोक) न किया जाएगा। (تفسیرنسفی ص۷۷)

का'बा सारे जहान के लिये राहनुमा है

अल्लाह रह़मान का पारह 4 सूरए आले इमरान आयत नम्बर 96 में फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِىْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ (٩٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सब में पहला घर जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुवा वोह है जो मक्के में है, बरकत वाला और सारे जहान का राहनुमा।

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयते करीमा के तह़्त तह़रीर फ़रमाते हैं : ऐ मुसलमानो ! या ऐ सारे इन्सानो ! यक़ीन से जान लो कि सारी रूए ज़मीन पर सब से पहले और सब से अफ़्ज़ल घर जो लोगों के दीनी और दुन्यवी फ़ाइदों के लिये पैदा किया गया और बनाया गया वोही है जो कि मक्का शरीफ़ में वाक़ेअ़ है, न बैतुल मुक़द्दस जो दरजे में भी का'बे के बा'द है और फ़ज़ीलत में भी।

(तफ़्सीरे नईमी, जि. 4 स. 29 मुख़्तसरन)

"अल्लाह का पाक घर" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से का'बा शरीफ़ के बारे में 12 मदनी फूल

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** के फ़ज़ाइल बे शुमार हैं, इन में से कुछ अ़र्ज़ किये जाते हैं : ﴾1﴿ बैतुल मुक़द्दस के मशहूर बानी ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام हैं कि आप ने जिन्नात से ता'मीर कराया मगर **का'बतुल्लाह** के मशहूर बानी ह़ज़रते ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام हैं ﴾2﴿ **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** में मक़ामे इब्राहीम, संगे अस्वद वग़ैरा ऐसी क़ुदरत की निशानियां मौजूद हैं जो बैतुल मुक़द्दस में नहीं ﴾3﴿ **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** पर परन्दे नहीं उड़ते बल्कि उस के आस पास फट (या'नी हट) जाते हैं ﴾4﴿ **ह़रमे का'बा** में बकरी और शेर एक जगह पानी पी लेते हैं, वहां शिकारी जानवर भी शिकार नहीं करते ﴾5﴿ **ह़रमे का'बा**

में ता क़ियामत जंगो क़िताल ह़राम है ﴾6﴿ **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** सारे ह़िजाज़ियों ख़ुसूसन मक्के वालों की परवरिश का ज़रीआ़ है कि वोह जगह ग़ैर ज़ी ज़र्अ़ (या'नी बे आबो ग्याह) है, जहां मआ़श के ज़राएअ़ सब नापैद हैं मगर वहां के बाशिन्दे दूसरों से ज़ियादा मज़े में हैं, ग़रज़ कि वोह जगह सिर्फ़ इबादतों के लिये है ﴾7﴿ रब तआ़ला ने **का'बे** की ह़िफ़ाज़त ख़ुद फ़रमाई कि फ़ील (या'नी हाथी) वालों को अबाबील से मरवा दिया ﴾8﴿ ह़ज हमेशा **का'बे** ही का हुवा, बैतुल मुक़द्दस का ह़ज कभी न हुवा ﴾9﴿ **अल्लाह** के आख़िरी नबी हुज़ूर मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** के पास मक्का शरीफ़ में पैदा हुए ﴾10﴿ रब तआ़ला ने **का'बे** के शहर ही को بَلَدٌ اَمِيْنٌ (या'नी अम्न वाला शहर) फ़रमाया और इसी की क़सम फ़रमाई कि फ़रमाया : ''وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۙ﴿۳﴾''

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और इस अम्न वाले शहर की (क़सम) ﴾11﴿ **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** के पास एक ''नेकी'' का सवाब एक लाख और बैतुल मुक़द्दस के पास पचास हज़ार ﴾12﴿ **फ़िरिश्तों** और बहुत से अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का क़िब्ला **का'बा** ही रहा न कि **बैतुल मुक़द्दस**। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 4 स. 30-31)

बीमार परन्दे हवाए का'बा से इलाज करते हैं

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में पारह 4 सूरए आले इमरान की 97 वीं आयते करीमा

فِیۡهِ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ ***(तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *उस में खुली निशानियां हैं)* की तफ़्सीर में लिखते हैं : जो इस की हुर्मतो फ़ज़ीलत पर दलालत करती हैं, उन निशानियों में से बा'ज़ येह हैं कि परन्दे **का'बा शरीफ़** के ऊपर नहीं बैठते और उस के ऊपर से परवाज़ नहीं करते बल्कि परवाज़ करते हुए आते हैं तो इधर उधर हट जाते हैं और जो परन्दे बीमार हो जाते हैं वोह अपना इलाज येही करते हैं कि **हवाए का'बा** में हो कर गुज़र जाएं इसी से इन्हें शिफ़ा होती है और वुहूश (या'नी जंगली जानवर) एक दूसरे को ह़रम में ईज़ा नहीं देते ह़त्ता कि **कुत्ते** उस सरज़मीन में **हिरन** पर नहीं दौड़ते और वहां शिकार नहीं करते और लोगों के दिल **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** की त़रफ़ खिचते हैं और उस की त़रफ़ नज़र करने से आसूं जारी होते हैं और **हर शबे जुमुआ़ को अरवाहे औलिया उस के गिर्द ह़ाज़िर होती हैं** और जो कोई उस की बेहुर्मती का क़स्द करता है बरबाद हो जाता है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

का'बे की ज़ियारत इबादत है

ह़दीसे पाक में है : **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** देखना इबादत, कुरआने अ़ज़ीम को देखना इबादत है और आ़लिम का चेहरा देखना इबादत है। (فردوس الاخبار، حدیث۲۷۹۱ ج۱ ص۳۷۶) एक और रिवायत में है : ज़म ज़म की त़रफ़ देखना इबादत है।

(اخبار مکۃ للفاکھی ج ۲ص۱۴ حدیث۱۱۰۵)

मस्जिदे ख़ैफ़ | मस्जिदे जिन्न | मस्जिदे जिइर्रानह | मस्जिदे निमरह | मस्जिदे ग़मामह | मस्जिदे जुमुआ़ | मस्जिदे क़िब्लतैन
मक़ामे इब्राहीम | ह़जरे अस्वद | ग़ारे सौर | ग़ारे हिरा | जबले उहुद | मेह़राबे नबवी | मिम्बरे रसूल
मस्जिदे क़िब्लतैन | रौज़तुल जन्नह | मज़ारे मैमूना | मज़ारे सय्यिदुना ह़म्ज़ा

www.dawateislami.net

का'बा क़िब्ला है

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : **नबिय्ये करीम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब का'बा शरीफ़ में दाख़िल हुए तो उस के गोशों (या'नी कोनों) में दुआ मांगी और नमाज़ न पढ़ी ह़त्ता कि वहां से तशरीफ़ ले आए जब निकले तो दो रक्अ़तें **का'बे** के सामने पढ़ीं और फ़रमाया : येह है **क़िब्ला**।

(بخاری ج۱ ص۱۵٦ حدیث۳۹۸)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان "येह है **क़िब्ला**" की वज़ाह़त में लिखते हैं : या'नी ता क़ियामत **का'बा** तमाम मुसलमानों का **क़िब्ला** हो चुका कभी मन्सूख़ (Cancel) न होगा, इस में लत़ीफ़ (या'नी बारीक) इशारा इस त़रफ़ भी हो रहा है कि **का'बे** का हर हिस्सा **क़िब्ला** है सारा **का'बा** नमाज़ी के सामने होना ज़रूरी नहीं।

(मिर्आतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 429)

का'बे के अन्दर नमाज़ में कहां रुख़ करे ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल" सफ़्हा 487 पर मस्अला नम्बर 50 है : **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** के अन्दर नमाज़ पढ़ी, तो जिस रुख़ चाहे पढ़े, **का'बे** की छत पर भी नमाज़ हो जाएगी, मगर उस की छत पर चढ़ना मम्नूअ़ है। (غُنیہ ص٦١٦ وغیرھا)

www.dawateislami.net

सिर्फ़ तीन मस्जिदों के लिये सफ़र की ह़दीस मअ़ तशरीह़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन मस्जिदों के सिवा और किसी त़रफ़ कजावे न बांधे जाएं (या'नी सफ़र न किया जाए) (1) मस्जिदे ह़राम, (2) मस्जिदे नबवी और (3) मस्जिदे अक़्सा।
(بخاری ج۱ ص۴۰۱ حدیث۱۱۸۹)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان तह़रीर फ़रमाते हैं : या'नी सिवा इन मस्जिदों के किसी और मस्जिद की त़रफ़ इस लिये सफ़र कर के जाना कि वहां नमाज़ का सवाब ज़ियादा है मम्नूअ़ है जैसे बा'ज़ लोग जुमुआ़ पढ़ने बदायूं से देह्‌ली जाते थे ताकि वहां की जामेअ़ मस्जिद में सवाब ज़ियादा मिले येह ग़लत़ है। (तीन के इ़लावा) **हर जगह की मस्जिदें सवाब में बराबर हैं।** इस तौजीह (दलील) पर ह़दीस बिल्कुल वाज़ेह़ है। बा'ज़ लोगों ने इस के मा'ना येह समझे कि सिवा इन तीन मस्जिदों के किसी और मस्जिद की त़रफ़ सफ़र ही ह़राम है। लिहाज़ा उ़र्स, ज़ियारते क़ुबूर वग़ैरा के लिये सफ़र ह़राम। अगर येह मत़लब हो तो फिर तिजारत, इ़लाज, दोस्तों की मुलाक़ात, इ़ल्मे दीन सीखने वग़ैरा तमाम कामों के लिये सफ़र ह़राम होंगे और येह ह़दीस, क़ुरआन के ख़िलाफ़ ही

www.dawateislami.net

होगी और दीगर अहादीस के भी, रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۱﴾ (پ۷،الانعام:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो, ज़मीन में सैर करो फिर देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुवा।

"मिर्क़ात" ने इसी जगह और "शामी" ने (बाब) "ज़ियारते क़ुबूर" में फ़रमाया कि "चूंकि **इन तीन मसाजिद के सिवा तमाम मस्जिदें सवाब में बराबर हैं** इस लिये और मस्जिदों की त़रफ़ (ज़ियादा सवाब ह़ासिल करने की निय्यत से) सफ़र मम्नूअ़ है और औलियाउल्लाह की क़ब्रें फ़ुयूज़ो बरकात में मुख़्तलिफ़ हैं, लिहाज़ा ज़ियारते क़ुबूर के लिये सफ़र जाइज़।"

(मिर्आतुल मनाजीह़ जि.1 स. 431, (مرقاۃ،ج۲ ص۳۹۷ تحتَ الحدیث۶۹۳،ردالمحتار،ج۳ ص۱۷۸

हर क़दम पर नेकी और ख़त़ा की मुआफ़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अबुल क़ासिम मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : "जो **ख़ानए का'बा** के क़स्द (या'नी इरादे) से आया और ऊंट पर सुवार हुवा तो ऊंट जो क़दम उठाता और रखता है, **अल्लाह** तआ़ला उस के बदले उस के लिये नेकी लिखता है और ख़त़ा मिटाता है और दरजा बुलन्द फ़रमाता है, यहां तक कि जब **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** के पास पहुंचा और त़वाफ़ किया और सफ़ा व मरवह के दरमियान **सअ़्य** की फिर सर

मुंडाया या बाल कतरवाए तो गुनाहों से ऐसा निकल गया, जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा।"

(شُعَبُ الْاِیمان ج٣ ص٤٧٨ حدیث٤١١٥)

सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام और का'बा

हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब जन्नत से इस दुन्या में तशरीफ़ लाए तो रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में वह्शत व तन्हाई की फ़रियाद की। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को **का'बे** की ता'मीर और उस के **तवाफ़** का हुक्म दिया, हज़रते सय्यिदुना नूह़ नजिय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने तक येही **का'बा** बर क़रार रहा, तूफ़ाने नूह़ में इस का'बे को सातवें आस्मान की त़रफ़ ऊपर का'बे के हुदूद की सीध में उठा लिया गया, अब वहां पर फ़िरिश्ते उस घर में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते हैं। (تفسیر کبیر ج٣ ص٢٩٦)

विलादत की ख़ुशी में का'बे पर झन्डा

सय्यिदतुना आमेना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने देखा कि तीन झन्डे नस्ब किये गए। एक मशरिक़ में, दूसरा मग़रिब में, तीसरा **का'बे की छत** पर और नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत हो गई। (خَصائِصِ کُبریٰ ج١ ص٨٢ مختصراً)

रूहुल अमीं ने गाड़ा का'बे की छत पे झन्डा
ता अ़र्श उड़ा फरेरा सुब्हे शबे विलादत (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

का'बे की एक ज़बान और दो होंट हैं

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : बेशक **का'बे की एक ज़बान और दो होंट** हैं और इस ने शिकायत करते हुए अ़र्ज़ की : **या रब्ब** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी त़रफ़ बार बार आने वाले और मेरी ज़ियारत करने वाले कम हो गए हैं ! तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वह्य फ़रमाई : मैं ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ और सजदे करने वाला इन्सान पैदा फ़रमाने वाला हूं जो तेरा इस त़रह़ मुश्ताक़ (या'नी शौक़ रखने वाला) होगा जिस त़रह़ **कबूतरी** अपने अन्डों की मुश्ताक़ (या'नी शौक़ रखने वाली) होती है ।

(معجم اوسط ج ٤ ص ٣٠٥ حديث ٦٠٦٦)

लश्करे सुलैमान और का'बा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत'' सफ़ह़ा 130 पर है : **ह़ज़रते** सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का तख़्त हवा पर उड़ता जा रहा था जब **का'बए मुअ़ज़्ज़मा** से गुज़रा तो का'बा रोया और बारगाहे अह़दिय्यत में (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़ुज़ूर) अ़र्ज़ की, कि एक नबी तेरे अम्बिया से और एक लश्कर तेरे लश्करों से गुज़रा, न मुझ में उतरा न नमाज़ पढ़ी । इस पर इर्शादे बारी तआ़ला हुवा : न रो ! मैं तेरा **ह़ज** अपने बन्दों पर **फ़र्ज़** करूंगा जो तेरी त़रफ़ ऐसे टूटेंगे जैसे परन्दा अपने घोंसले

www.dawateislami.net

की त़रफ़ और ऐसे रोते हुए दौड़ेंगे जिस त़रह़ ऊंटनी अपने बच्चे के शौक़ में और तुझ (या'नी तेरे शहर) में **नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां** (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) को पैदा करूंगा जो मुझे सब अम्बिया (عَلَیْہِمُ السَّلَام) से ज़ियादा प्यारा है। (تفسیر بغوی ج۳ ص ۳۵۱ ملخصاً)

का'बा सोने की ज़न्जीरों में बांध कर मह़शर में लाया जाएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "तौरात शरीफ़" में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत अपने सात लाख मुक़र्रब फ़िरिश्तों को भेजेगा जिन में से हर एक के हाथ में सोने की एक ज़न्जीर होगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "जाओ ! और **का'बा** इन ज़न्जीरों में बांध कर मह़शर की त़रफ़ ले आओ," फ़िरिश्ते जाएंगे उसे ज़न्जीरों से बांध कर खींचेंगे और एक फ़िरिश्ता पुकारेगा : "ऐ का'बतुल्लाह ! चल।" तो का'बए मुबारका कहेगा : "मैं नहीं चलूंगा जब तक मेरा सुवाल पूरा न हो जाए।" फ़ज़ाए आस्मानी से एक फ़िरिश्ता पुकारेगा : "तू सुवाल कर !" तो **का'बा** बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करेगा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरे पड़ोस में मदफ़ून मोअमिनीन के ह़क़ में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा।" तो **का'बा** शरीफ़ एक आवाज़ सुनेगा : "मैं ने तेरी दरख़्वास्त क़बूल फ़रमा ली।" ह़ज़रते सय्यिदुना **वह्ब** बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "फिर **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में दफ़्न होने वालों को उठाया जाएगा जिन के

चेहरे सफ़ेद होंगे। वोह सब एह़राम की ह़ालत में **का'बे** के गिर्द जम्अ़ हो कर तल्बिय्या (या'नी लब्बैक) कह रहे होंगे। फिर फ़िरिश्ते कहेंगे : **ऐ का'बा** ! अब चल। तो वोह कहेगा : "मैं नहीं चलूंगा, जब तक कि मेरी दरख़्वास्त क़बूल हो जाए।" तो फ़ज़ाए आस्मानी से एक फ़िरिश्ता पुकारेगा : तू मांग, तुझे दिया जाएगा। तो **का'बा** शरीफ़ कहेगा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरे गुनहगार बन्दे जो इकट्ठे हो कर दूर दूर से ग़ुबार आलूद मेरे पास आए। उन्हों ने अपने अह्लो इ़याल और अह़बाब को छोड़ा, उन्हों ने फ़रमां बरदारी और ज़ियारत के शौक़ में निकल कर तेरे हुक्म के मुत़ाबिक़ **मनासिके ह़ज** अदा किये, तो मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि उन के ह़क़ में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा, उन को क़ियामत की घबराहट से अम्न इनायत फ़रमा और उन्हें मेरे गिर्द जम्अ़ कर दे।" तो एक फ़िरिश्ता निदा देगा : **ऐ का'बा** ! उन में ऐसे लोग भी होंगे जिन्हों ने तेरे त़वाफ़ के बा'द गुनाहों का इर्तिकाब किया होगा और इन पर इसरार कर के अपने ऊपर जहन्नम वाजिब कर लिया होगा। तो **का'बा** अ़र्ज़ करेगा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन गुनहगारों के ह़क़ में भी मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुका है।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "मैं ने उन के ह़क़ में तेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाई।" तो वोही फ़िरिश्ता निदा करेगा : जिस ने **का'बे** की ज़ियारत की थी वोह दीगर लोगों से अलग हो जाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन सब को **का'बे** के गिर्द जम्अ़ कर देगा। उन के चेहरे सफ़ेद होंगे और वोह जहन्नम से बे ख़ौफ़ हो कर त़वाफ़ करते हुए

www.dawateislami.net

तल्बिया कहेंगे । फिर फ़िरिश्ता पुकारेगा : ऐ का'बतुल्लाह ! चल । तो का'बा शरीफ़ (इस त़रह़) तल्बिया कहेगा :

''لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ، وَالْخَیْرُ کُلُّہٗ،

بِیَدَیْکَ، لَبَّیْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَۃَ

لَکَ وَالْمُلْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ،''

फिर फ़िरिश्ते उस को खींच कर मैदाने मह़शर तक ले जाएंगे ।

(الروض الفائق ص٦٦)

बरोज़े क़ियामत का'बए मुशर्रफ़ा दुल्हन की त़रह़ उठाया जाएगा

मन्क़ूल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बैतुल्लाह से वा'दा फ़रमाया कि हर साल छे लाख अफ़राद इस का ह़ज करेंगे, अगर कम हुए तो **अल्लाह** तआला फ़िरिश्तों के ज़रीए उन की कमी पूरी फ़रमा देगा । और बरोज़े क़ियामत का'बए मुशर्रफ़ा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا **पहली रात की दुल्हन** की त़रह़ उठाया जाएगा तो जिन लोगों ने इस का **ह़ज** किया वोह इस के पर्दों के साथ लटके होंगे और इस के गिर्द त़वाफ़ कर रहे होंगे यहां तक कि येह (या'नी का'बा शरीफ़) **जन्नत** में दाख़िल होगा तो वोह भी उस के साथ दाख़िल हो जाएंगे । (इह़याउल उ़लूम, जि.1 स. 324)

तसद्दुक़ हो रहे हैं लाखों बन्दे गिर्द फिर फिर कर

त़वाफ़े ख़ानए का'बा अ़जब दिलचस्प मन्ज़र है

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

तवाफ़ के फ़ज़ाइल

पारह 17 सूरतुल हज्ज आयत 29 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾ (پ١٧،حج:٢٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस आज़ाद घर का तवाफ़ करें।

तवाफ़ की इब्तिदा कैसे हूई ?

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "तफ़्सीरे नईमी" में नक़्ल फ़रमाते हैं : (साहिबे तफ़्सीर) रूहुल बयान और (साहिबे तफ़्सीर) अज़ीज़ी ने फ़रमाया कि ज़मीन से पहले पानी ही पानी था। कुदरती तौर पर दो हज़ार साल पहले का'बे की जगह उस पर **सफ़ेद झाग** पैदा हुवा। कुछ रोज़ में उस को फैला कर ज़मीन कर दिया गया फिर जब फ़िरिश्तों को रब (عَزَّوَجَلَّ) ने आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पैदाइश की ख़बर दी तो उन्हों ने अपना ख़िलाफ़त का इस्तिह़क़ाक़ (या'नी ह़क़दार होने का दा'वा) पेश किया और आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पैदाइश की ह़िक्मत पूछी। मगर इस जुर्अत की मा'ज़िरत में तौबा की निय्यत से सात बरस अ़र्शे आ'ज़म का **तवाफ़** किया, हुक्मे इलाही हुवा कि ज़मीन में भी इसी झाग की जगह निशान लगा दो जहां मेरे बन्दे ख़ता कर के इस के **तवाफ़** से मुझे राज़ी किया करें।

(تفسیرنعیمی ج١ص٦٤١،تفسیرروح البیان ج١ص٢٣٠)

तवाफ़ में हर क़दम के बदले दस नेकियां और......

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि जिस ने गिन कर त़वाफ़ के सात फैरे किये और फिर दो रक्अ़तें अदा कीं तो येह एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर है। और **त़वाफ़** करते हुए आदमी के हर क़दम के बदले उस के लिये दस नेकियां लिखी जाती हैं और उस के दस गुनाह मिटा दिये जाते हैं और दस दरजात बुलन्द किये जाते हैं।

(مسند امام احمد بن حنبل ج۲ص۲۰۲ حدیث۴۴۶۲)

गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो बैतुल्लाह के त़वाफ़ के सात फैरे करे और उस में कोई लग़्व (या'नी बेहूदा) बात न करे तो येह एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर है।

(المعجم الکبیر ج۲۰ص۳۶۰ حدیث۸۴۵)

गुलाम आज़ाद करने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : "जो शख़्स मुसलमान गुलाम को आज़ाद करेगा इस (गुलाम) के हर उ़ज़्व के बदले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस (आज़ाद करने वाले) के हर उ़ज़्व को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाएगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मरजाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने जब सय्यिदुना ज़ैनुल

आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमते आ़ली में येह ह़दीसे पाक सुनाई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपना एक ऐसा **गुलाम आज़ाद** कर दिया जिस की ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا **दस हज़ार दिरहम** क़ीमत लगा चुके थे ।

(بُخاری ج ۲ ص ۱۵۰ حدیث۲۵۱۷)

रोज़ाना 120 रह़मतों का नुज़ूल

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बैतुल ह़राम का ह़ज करने वालों पर हर रोज़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ 120 **रह़मतें** नाज़िल फ़रमाता है 60 **त़वाफ़** करने वालों के लिये और 40 **नमाज़** पढ़ने वालों के लिये और 20 नज़र करने वालों के लिये ।" (الترغیب والترھیب ج۲ص۱۲۳حدیث۶) याद रखिये ! इस ह़दीसे पाक में बयान कर्दा फ़ज़ीलत सिर्फ़ ह़ाजियों के लिये है ।

पचास मरतबा त़वाफ़ करने की अ़ज़ीम फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : जिस ने 50 मरतबा त़वाफ़ किया गुनाहों से ऐसा निकल गया जैसे आज अपनी मां से पैदा हुवा । (ترمذی ج ۲ص ۲۴۴ حدیث۸۶۷)

त़वाफ़ नमाज़ की त़रह़ है

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बैतुल्लाह के गिर्द **त़वाफ़** नमाज़ की त़रह़ है सिवाए इस के कि तुम इस में कलाम कर सकते हो, तो जो **त़वाफ़** में कलाम करे तो अच्छा ही कलाम करे। (ترمذی ج ۲ ص ۲۸۶ حدیث۹۶۲)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "बैतुल्लाह के गिर्द **त़वाफ़ नमाज़ की त़रह़ है**" के तह़्त फ़रमाते हैं : "**त़वाफ़** भी नमाज़ की त़रह़ बेहतरीन इ़बादत है। उ़लमा फ़रमाते हैं कि मक्के वालों के लिये (नफ़्ली) नमाज़ (नफ़्ली) **त़वाफ़** से अफ़्ज़ल है और बाहर वालों के लिये (नफ़्ली) **त़वाफ़** (नफ़्ली) नमाज़ से अफ़्ज़ल कि उन्हें इस ख़ास ज़माने ही में त़वाफ़ मुयस्सर होता है।"

(मिर्आत, जि. 4, स. 132)

त़वाफ़े का'बा के लिये वुज़ू वाजिब है

वुज़ू न हो तो नमाज़ व सजदए तिलावत और कुरआन शरीफ़ छूने के लिये वुज़ू करना फ़र्ज़ है और **ख़ानए का'बा** के त़वाफ़ के लिये वुज़ू वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 301-302)

शदीद गर्मी में त़वाफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद हाशिम ठठवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : जिस ने ख़ामोश, ज़िक्रे इलाही के साथ, शिद्दत की गर्मी में त़वाफ़ इस त़रह़ किया कि न कलाम किया, न किसी को ईज़ा दी और हर शौत़ (या'नी फैरे) पर इस्तिलाम किया तो हर क़दम पर सत्तर हज़ार नेकियां लिखी जाएंगी। सत्तर हज़ार गुनाह मह़्व होंगे और सत्तर हज़ार दरजे बुलन्द होंगे। (किताबुल ह़ज, स. 280)

बरसात में त़वाफ़ की फ़ज़ीलत

ह़दीसे पाक में है : जिस ने **बरसात में त़वाफ़** के सात चक्कर लगाए उस के साबिक़ा (या'नी पिछले) गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। (قوتُ القلوب ج۲ص۱۹۸)

जब हम बारिश में त़वाफ़ कर चुके तो.....

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इक़ाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं ने बारिश के दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना **अनस** बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ बैतुल्लाह शरीफ़ का **त़वाफ़** किया। जब हम **त़वाफ़** मुकम्मल करने के बा'द ''मक़ामे इब्राहीम'' पर ह़ाज़िर हुए और दो रक्अ़तें अदा कीं तो ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हम से फ़रमाया कि ''नए सिरे से अ़मल शुरूअ़ करो

www.dawateislami.net

क्यूंकि तुम्हारी मग़फ़िरत हो चुकी है।" फिर फ़रमाया कि जब हम ने **हुज़ूरे** पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ **बारिश** के दौरान **तवाफ़** किया था तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से इसी तरह फ़रमाया था। (ابن ماجہ ج۳ص۵۲۳حدیث۳۱۱۸)

आ'ला हज़रत ने बारिश में तवाफ़े का'बा किया

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 561 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत**" सफ़्हा 209 पर है : जब अवाख़िरे मुहर्रम (या'नी मुहर्रमुल हराम के आख़िरी दिनों) में بِفَضْلِہٖ تَعَالٰی सिहहत हुई। वहां एक सुल्तानी हमाम है मैं उस में नहाया। बाहर निकला हूं कि अब्र (या'नी बादल) देखा, हरम शरीफ़ पहुंचते पहुंचते बरसना शुरूअ़ हुवा। मुझे हदीस याद आई कि "जो **मीह** (या'नी बरसात) बरसते में **तवाफ़** करे वोह रहमते इलाही में तैरता है।" फ़ौरन संगे अस्वद शरीफ़ का बोसा ले कर **बारिश** ही में सात फैरे **तवाफ़** किया, बुख़ार फिर औद कर (या'नी वापस) आया। मौलाना सय्यिद इस्माईल ने फ़रमाया : "एक ज़ईफ़ हदीस के लिये तुम ने अपने बदन की येह बे एहतियाती की !" मैं ने कहा : "हदीस ज़ईफ़ है मगर उम्मीद بِحَمْدِ اللّٰہِ تَعَالٰی क़वी (या'नी ताक़तवर) है।" येह **तवाफ़** بِحَمْدِ اللّٰہِ تَعَالٰی बहुत मज़े का था। **बारिश** के सबब ताइफ़ीन (या'नी तवाफ़ करने वालों) की वोह कसरत न थी।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, हिस्सए दुवुम स. 209)

आज कल बारिश में त़वाफ़ की दुश्वारियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दौर में ह़ाजियों की ता'दाद बहुत कम होती थी मगर आज कल काफ़ी बढ़ चुकी है। लिहाज़ा **बारिश** के अन्दर **त़वाफ़** में ठीक ठाक हुजूम होता है, इस में मर्दों और औ़रतों का इख़्तिलात़, बे एह़तियात़ियों की वजह से बे पर्दगियों, बे सितरियों के मुआ़मलात, मीज़ाबे रह़मत से ह़त़ीम शरीफ़ में निछावर होने वाले पानी में गुस्ल करने वालों और वालियों की लपक झपक वग़ैरा सब कुछ होता है, लिहाज़ा ऐसे मौक़अ़ पर ह़ाजियों को ख़ूब ग़ौर कर लेना चाहिये कि कहीं मुस्तह़ब पर अ़मल करते करते गुनाहों में न जा पड़ें। अगर औ़रतों से बदन टकराए बिग़ैर **बारिश में त़वाफ़** मुमकिन न हो तब तो जान बूझ कर ऐसा करने वाले सवाब के ह़क़दार होने के बजाए गुनहगार होंगे। हां जिन दिनों भीड़ न हो, मौक़अ़ मिलने पर बारिश में त़वाफ़ की सआ़दत ज़रूर ह़ासिल करनी चाहिये।

मदीने में चलूं मक्के की गलियों में फिरूं या रब्ब !
मैं बारिश में त़वाफ़े ख़ानए का'बा करूं या रब्ब !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सफ़ा मरवह

येह दोनों पहाड़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में से हैं, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला पारह 2 सूरतुल बक़रह आयत नम्बर 158 में इर्शाद फ़रमाता है :

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِن شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ فَإِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾

(پ۲، البقرة: ۱۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सफ़ा और मरवह **अल्लाह** के निशानों से हैं तो जो इस घर का ह़ज या उ़मरह करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के फैरे करे और जो कोई भली बात अपनी त़रफ़ से करे तो **अल्लाह** नेकी का सिला देने वाला ख़बरदार है।

मर्द व औ़रत पथ्थर बन गए

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : पिछले ज़माने में एक शख़्स था **इसाफ़** और एक औ़रत थी **नाइला,** उन्हों ने ख़ानए का'बा में एक दूसरे को बद निय्यती से हाथ लगाया। अ़ज़ाबे इलाही से दोनों पथ्थर हो (या'नी बुत बन) गए और इ़ब्रत के लिये "इसाफ़" को तो **सफ़ा** पहाड़ पर रख दिया गया और "नाइला" को **मरवह** पर ताकि लोग उन्हें देख कर यहां गुनाह के ख़याल से बचें, कुछ ज़माने के बा'द जब जहालत का ज़ोर हुवा तो लोगों ने उन की परस्तिश

www.dawateislami.net

शुरूअ़ कर दी कि जब सफ़ा और मरवह के दरमियान दौड़ते तो ता'ज़ीम के इरादे से उन्हें छू लेते, मुसलमानों (सहा़बए किराम) को **सफ़ा मरवह** के दरमियान दौड़ना ना पसन्द हुवा क्यूंकि इस में बुत परस्तों और बुत परस्ती से मुशाबहत थी । तब येह आयते करीमा उतरी जिस में उन की तसल्ली फ़रमाई गई कि तुम्हारा येह काम (या'नी सअ़्य करना) रिज़ाए इलाही के लिये है, तुम इस में ह़रज न समझो । (तफ़्सीरे नईमी, जि. 2 स. 97)

बीबी हाजिरा की सअ़्य की ईमान अफ़्रोज़ हि़कायत

हुक्मे इलाही से ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام खजूरों की एक टोकरी, कुछ रोटी के टुकड़े और पानी का मश्कीज़ा दे कर सय्यिदतुना **हाजिरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا और अपने दूध पीते लख़्ते जिगर ह़ज़रते सय्यिदुना **इस्माईल** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को बे आबो गियाह मैदान में छोड़ कर वापस तशरीफ़ ले गए । **मुफ़स्सिरे शहीर** ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं : जब तक खुरमा (या'नी खजूरें) और पानी रहा ह़ज़रते **हाजिरा** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) इत़मिनान से गुज़र करती और फ़रज़न्द को दूध पिलाती रहीं मगर पानी ख़त्म होने पर प्यास ने सताया, लख़्ते जिगर ने बे इख़्तियार रोना शुरूअ़ कर दिया अपनी तो इतनी फ़िक्र न हुई मगर नूरे नज़र की बे क़रारी देखी न गई, उठीं और **सफ़ा** पर चढ़ीं कि शायद कहीं पानी का

www.dawateislami.net

निशान मिले मगर न मिला, मायूस हो कर नीचे उतरीं, **मरवह** पहाड़ की त़रफ़ रवाना हुईं मगर नज़र फ़रज़न्द पर थी, राह के कुछ हि़स्से में फ़रज़न्द से आड़ हो गई तो आप उसे जल्द त़ै करने के लिये दौड़ कर चलीं, इस आड़ से निकल जाने पर फिर आहिस्ता चलीं, यहां तक कि "मरवह" पर पहुंच गईं वहां चढ़ कर भी पानी कहीं न देखा फिर "सफ़ा" की त़रफ़ रवाना हुईं। इसी त़रह़ **सात चक्कर** किये हर दफ़्आ़ दरमियान में दौड़ती थीं (सफ़ा व मरवह की सअ्य इसी की यादगार है) अख़ीर बार "मरवह" पर चढ़ीं तो एक हैबतनाक आवाज़ कान में पड़ी ! डर कर फ़रज़न्द के पास आईं देखा कि वोह रोते में अपनी एड़ियां ज़मीन पर रगड़ रहे हैं जिस से शीरीं (या'नी मीठे) पानी का चशमा जारी है ! बहुत ख़ुश हुईं और उस के गिर्द मिट्टी जम्अ़ कर के फ़रमाने लगीं **:** يَامَاءُ زَمْ زَمْ (या'नी) "ऐ पानी ! ठहर ठहर" इस लिये इस का नाम **आबे ज़म ज़म** हुवा। (तफ़्सीरे नईमी जि.1 स. 694)

इस में ज़म ज़म हो कि थम थम, इस में जमजम हो कि बेश
कसरते कौसर में ज़म ज़म की त़रह़ कम कम नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मक़ामे इब्राहीम

मक़ामे इब्राहीम का कुरआने करीम में ज़िक्र किया गया है चुनान्चे पारह अव्वल **सूरतुल बक़रह** आयत नम्बर 125 में इर्शाद होता है **:**

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّی ؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ ।

"मक़ामे इब्राहीम" **जन्नती पथ्थर** है । ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इस पर तीन मरतबा खड़े हुए : (1) इस मुबारक पथ्थर पर खड़े हुए और आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बहू (ज़ौजए सय्यिदुना इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का सरे अन्वर धुलाया (2) ता'मीरे का'बा के वक़्त जब दीवारें ऊंची हुईं, सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने सय्यिदुना इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : कोई पथ्थर लाओ ताकि उस पर खड़े हो कर दीवार बनाएं । सय्यिदुना इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पथ्थर की तलाश में "जबले अबी क़ुबैस" पर तशरीफ़ ले गए । राह में ह़ज़रते सय्यिदुना **जिब्रील** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मिले और कहा कि आइये मैं आप को एक पथ्थर बताऊं जो **आदम** عَلَیْہِ السَّلَام के साथ दुन्या में आया और उसे **इद्रीस** عَلَیْہِ السَّلَام ने "तूफ़ाने नूह़ी" के ख़ौफ़ से इस पहाड़ में दफ़्न कर दिया है, उस जगह छोटे बड़े दो पथ्थर मदफ़ून हैं **छोटे** को तो का'बे की दीवार में दरवाज़े के क़रीब लगा दो कि हर त़वाफ़ करने वाला उस को चूमा करे या'नी संगे अस्वद और **बड़े** पर इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ والتسلیم खड़े हो कर इमारत बनाएं । चुनान्चे आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام दोनों पथ्थर ले आए और

www.dawateislami.net

येह पैग़ामे इलाही भी पहुंचाया । इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने हुक्मे इलाही के मुताबिक़ संगे अस्वद को तो एक गोशे में लगा दिया और बड़े पर खड़े हो कर ता'मीर का काम जारी किया जिस क़दर इमारत बुलन्द होती जाती थी येह पथ्थर भी ऊंचा होता जाता था यहां तक कि आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ता'मीर से फ़ारिग़ हुए । (तफ़्सीरे नईमी, जि.1 स. 280)

होते कहां ख़लीलो बिना का'बा व मिना
लौलाक वाले साहिबी सब तेरे घर की है

(हदाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हज्रे अस्वद

येह पथ्थर है, हदीसे पाक में है : **रुक्न** (या'नी हज्रे अस्वद) और **मक़ामे** (इब्राहीम) दो "जन्नती याक़ूत" हैं । पहले बहुत नूरानी थे । **अल्लाह** तआ़ला ने इन का नूर मह़्व कर (या'नी छुपा) दिया अगर ऐसा न होता तो येह मशरिक़ व मग़रिब को चमकाते । (तफ़्सीरे नईमी, जि. 1 स. 630) एक और रिवायत में है : जब **संगे अस्वद** दीवारे का'बा में क़ाइम किया गया तो उस की रोशनी चारों तरफ़ दूर तक जाती थी जहां तक उस की रोशनी पहुंची वहां तक **हरम की हुदूद** मुक़र्रर हुई जिस में शिकार करना मन्अ़ है और **संगे अस्वद** का रंग बिल्कुल सफ़ेद था गुनहगारों के हाथों से सियाह हो गया । (ऐज़न स. 680-681)

www.dawateislami.net

हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे चूमा है। **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : ऐ ह़जरे अस्वद ! मैं जानता हूं तू पथ्थर है, नफ़्अ़ व नुक़्सान का मालिक नहीं, अगर मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को तुझे चूमते न देखा होता तो तुझे कभी न चूमता। (बलदुल अमीन, स. 61) **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत येह पथ्थर उठाया जाएगा, इस की **दो आंखें** होंगी जिस से देखेगा, **ज़बान** होगी जिस से बोलेगा और अपने इस्तिलाम करने वाले के ह़क़ में गवाही देगा।

(ترمذی ج۲ص۲۸٦حدیث۹٦۳)

ह़जरे अस्वद की 4 ख़ुसूसिय्यात

❖ इस का मस करना (या'नी छूना) गुनाहों को मिटाता है ❖ ए'लाने नुबुव्वत से पहले भी येह **पथ्थर** मुबारक शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम कहता था ❖ इस पथ्थर शरीफ़ को फिर एक मरतबा अपनी अस्ल शक्ल पर कर दिया जाएगा ❖ क़ियामत के दिन इस का ह़ज्म (या'नी जसामत) जबले अबी कुबैस जितना होगा। (بلدالامین ص۶۲ و الجامع اللطیف لابن ظهیرة ص ۳۷،۳۸)

कालक जबीं की सजदए दर से छुड़ाओगे
मुझ को भी ले चलो येह तमन्ना ह़जर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इस्लाम की ख़ूबी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

مِنْ حُسْنِ اِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْكُهٗ مَا لَا يَعْنِيْهِ ۔

या'नी आदमी के इस्लाम की ख़ूबियों में से येह ख़ूबी है कि वोह बे मक़्सद और फ़ुज़ूल काम छोड़ दे। (ترمذی، ۴/۱۴۲حدیث: ۲۳۲۴)

M.R.P. ₹ 00/-

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025*T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net